राजदेव सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रूड़की-247667

निदेशक की कलम से.....

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की की वार्षिक हिन्दी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** के प्रबुद्ध पाठकगणों को यह अवगत कराते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है कि संस्थान विगत 17-18 वर्षों से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रति परम स्नेह की अभिव्यक्ति की प्रतीक "प्रवाहिनी" पत्रिका का प्रकाशन इस वर्ष भी हिन्दी दिवस के गरिमामय अवसर पर कर रहा है। पत्रिका का यह 18वॉ संस्करण है जिसमें विज्ञान, साहित्य तथा कला विषयक भिन्न-भिन्न लेखों को सम्मिलित किया गया है। सर्वविदित है कि भाषा कोई भी हो वह अभिव्यक्ति एवं विचार-विनिमय का एक सशक्त माध्यम होती है उसमें उस राष्ट्र की संस्कृति, परम्परा एवं सभ्यता निहित होती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट तथा व्यापक ही नहीं है बल्कि एक वैज्ञानिक भाषा भी है।

वैसे तो राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्य संस्कृति वाला एक शोध संस्थान है जिसने अपने शोध एवं विकास कार्यों के आधार पर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है, फिर भी संवैधानिक प्रावधानों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से संस्थान अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने का यथासंभव प्रयास कर रहा है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान में समय-समय पर कार्यशालाएं, संगोष्ठियॉ, बैठकें तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग हेतु यहॉ केवल कर्मचारी ही नहीं अपितु अधिकारी भी स्वेच्छा से हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा देने की भावना से बढ़-चढ़कर कार्य कर रहे हैं।

संस्थान इस वर्ष हिन्दी पखवाड़े के स्थान पर हिन्दी मास मना रहा है। मैं संस्थान के सभी पदाधिकारियों से आग्रह करता हूँ कि वे राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करें और राजभाषा हिन्दी के विकास अभियान को सफल बनाने में अपना सहयोग दें।

"प्रवाहिनी" के प्रस्तुत अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके पारिजनों के साथ-साथ संस्थानेतर व्यक्तियों के रोचक, महत्वपूर्ण एवं उपयोगी लेखों को सम्मिलित किया गया है तथा हर वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखते हुए लेखों की भाषा सरल एवं सुबोध रखी गई है। पूरी उम्मीद है कि यह संस्करण समस्त सुधी पाठकों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा। हिन्दी मास 2011 के अवसर पर मैं राजसं, रूड़की के समस्त पदाधिकारियों को अपनी ओर से बधाई देता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि जिस प्रकार पदाधिकारियों ने शोध एवं विकास कार्यों में कीर्तिमान स्थापित किए हैं उसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अनुकरणीय कार्य कर उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। हिन्दी मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने वाले अधिकारी/कर्मचारीगण, "प्रवाहिनी" पत्रिका का सम्पादक मंडल तथा वे समस्त विद्वत लेखक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इस अंक के लिए अपने रोचक एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख देकर इस अंक के प्रकाशन में हमें सहयोग प्रदान किया है। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)